IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन"

रविकान्त गौड़, शोधार्थी, शिक्षा विभाग

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शिक्षक को ऐसी अनुदेशनात्मक तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए जिससे बच्चों को सीखने की प्रेरणा मिल सके प्रभावशाली एवं दक्ष शिक्षक सदैव शिक्षार्थियों की योग्यताओं को ध्यान में रख कर अधिगम की विभिन्न क्रियाओं को निर्धारित करता है कक्षा एक ऐसा स्थान है जहाँ भिन्न भिन्न संस्कृतियों, योग्यताओं और क्षमताओं वाले बच्चे होते है और इन सभी कारकों को ध्यान में रख कर शिक्षा प्रदान करने के लिए एक निपुण, कुशल और प्रभावी शिक्षक की आवश्यकता होती है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्नत भौतिक सुविधाएँ शिक्षण तकनीकें आदि शिक्षक की प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहायक होती है परन्तु ये प्रभावी शिक्षक का स्थान कभी नहीं ले सकती, शिक्षा की प्रक्रिया में प्रभावी शिक्षक का महत्व निर्विवाद है। एक प्रभावी शिक्षक शिक्षार्थियों के जीवन में अमिट छाप छोड़ता है और उनके व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाने का प्रयास करता है और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक होता है।

शिक्षण दक्षता

शिक्षण दक्षता के लिए एक शिक्षक को हमेशा अपने व्यवसाय व भविष्य के प्रति जागरूक रहना चाहिए ताकि वह आधुनिक समाज को शैक्षणिक आवश्यकताओं की आपूर्ति योग्य बना सके अतः शिक्षकों को अपनी शिक्षण दक्षता के लिए अपने ज्ञान व प्रशिक्षण को वर्तमान आवश्यकताओं, आशाओं, आकांक्षाओं एवं निर्धारित मानदंडों के अनुरूप होना चाहिए। दक्षता का सामान्य अर्थ है कि किसी कार्य या उद्देश्य को पूरा करने में लगाया गया समय, श्रम या ऊर्जा कितनी अच्छी तरह से काम आती है दक्षता का विभिन्न क्षेत्रों एवं विषयों में उपयोग किया जाता है और विभिन्न सन्दर्भों में इसके अर्थों में भी काफी भिन्नता पायी जाती है।

शिक्षण दक्षता से युक्त शिक्षक, शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा छात्राध्यापकों में व्यवहार, कार्यकुशलता, शिक्षण व्यवहार, ज्ञानदर्पण आदि का विकास करके गुणवत्तापूर्ण शिक्षण कार्य को पूर्ण करता है।

शिक्षण प्रभावशीलता

शिक्षण प्रभावशीलता शब्दों का सीधा सम्बन्ध शिक्षक के शिक्षण की प्रभावशीलता से है अतः शिक्षक अपने शिक्षण कार्य के द्वारा छात्रों को किस प्रकार संतुष्ट करता है? छात्रों पर पड़े शिक्षण प्रभाव को ही शिक्षण प्रभावशीलता कहते हैं । किसी भी शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता का अर्थ उसकी शिक्षण प्रक्रिया से प्राप्त छात्रों का संतुष्टि स्तर, छात्रों की सफलता का स्तर, विशिष्ट एवं शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के स्तर से है। अतः शिक्षण प्रभावशीलता का सीधा सम्बन्ध शिक्षा की शिक्षण निष्पादन क्षमता से है, जिसको वह अपने शिक्षण कौशलों व अर्जित ज्ञान के माध्यम से छात्रों को कक्षा में पढ़ाते हुए अर्जित करता है।

अतः किसी भी शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता शिक्षण प्रक्रिया निर्धारित मानक, आवश्यक कौशल एवं आवश्यक पर्यावरण से समन्वित होकर जो शिक्षक उपलब्धियां प्राप्त होती हैं यदि वे निर्धारित मानकों तथा आंतरिक तथा वाह्य सन्दर्भों के अनुकूल हैं तो शिक्षक प्रक्रिया को प्रभावशाली तथा उस शिक्षक को प्रभावशील शिक्षक कहा जायेगा।

शिक्षकों से सम्बन्धित भारतीय संदर्भ में विभिन्न प्रकार के सेवारत एवं सेवा पूर्व पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं, जिसके फलस्वरूप गुणवत्तायुक्त शिक्षकों का निर्माण सम्भव होता है। भारतीय सन्दर्भ में शिक्षा से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों का निर्माण राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के द्वारा किया जाता है। शिक्षकों से सम्बन्धित राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा बी.एड. एक वर्षीय, बी.एड. द्विवर्षीय, बी.एल.एड. चार वर्षीय, डी.एल.एड. द्विवर्षीय व बी.ए./बी.एस.सी. बी.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं। जोकि अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए होते हैं। इन पाठ्यक्रमों में गुणात्मक सुधार समय–समय पर सम्भव होते हैं, जिनके फलस्वरूप शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाया जाता है।

बी.एल.एड. चार वर्षीय

यह पाठ्यक्रम प्राथमिक शिक्षकों की शिक्षा के लिए है तथा इसमें प्रवेश राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, विश्वविद्यालय के नियमानुसार होता है और इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिए छात्रों को इन्टरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। इस पाठ्यक्रम की अवधि चार वर्षीय है।

डी.एल.एड. द्विवर्षीय

प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित पूर्व में बी.टी.सी. पाठ्यक्रम चलाया जाता था जिसको संशोधित कर वर्तमान में डी.एल.एड. पाठ्यक्रम कहा जाता है। यह मुख्यतः प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित ही है। इसमें प्रवेश राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, बेसिक शिक्षा परिषद के नियमानुसार होता है। इसमें प्रवेश लेने के लिए छात्र को स्नातक उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। इस पाठ्यक्रम की अवधि द्विवर्षीय है।

शोध समस्या का कथन

"प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन"

शोध उद्देश्य

शोध समस्या से सम्बंधित शोध उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

1. बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

शोधकर्ता ने शोधकार्य में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का अध्ययन किया है।

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमाएं

किसी भी शोधकार्य को निष्कर्ष तक पहुंचाने के लिए व शोध को सही रूप देने के लिए शोध सीमाओं या परिसीमाओं का होना अति आवश्यक है अतः शोधकार्य की परिसीमाएं निम्नलिखित हैं।

शोधकार्य का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के मेरठ मंडल (बुलंदशहर, हापुड़, नोएडा, मेरठ, गाजियाबाद) तक सीमित है।

शोधकार्य में न्यादर्श प्राथमिक स्तर पर कुल 400 शिक्षकों तक ही सीमित है।

शोधकार्य ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों तक ही सीमित है।

शोधकार्य केवल वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि तक सीमित है।

जनसँख्या

प्रस्तुत शोध में जनसँख्या में उत्तर प्रदेश के मेरठ मंडल (बुलंदशहर, हापुड़, नोएडा, मेरठ, गाजियाबाद) के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत समस्त प्राथमिक शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध प्रबंध में उत्तर प्रदेश के मेरठ मंडल के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों से 400 प्राथमिक शिक्षकों का यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में चयन किया है। जिसमे 200 अध्यापक तथा 200 अध्यापिकाओं का चयन किया है। जिसमे 100 अध्यापक ग्रामीण तथा 100 अध्यापक शहरी एवं 100 अध्यापिकाएं शहरी तथा 100 अध्यपिका ग्रामीण हैं। मेरठ मंडल के समस्त विद्यालयों में से शहरी व ग्रामीण

विद्यालयों को यादृच्छिकी न्यादर्श विधि द्वारा चुना गया। तत्पश्चात चयनित विद्यालयों में से 200 अध्यापक व 200 अध्यापिकाओं को लेकर उन पर परीक्षणों को प्रशासित करके आकड़ों का संकलन किया गया। जिसमे से उनकी योग्यता के आधार पर उनका वर्गीकरण निम्नलिखित रूप से किया गया।

क्षेत्र के आधार पर

तलिका

क्रमांक	क्षेत्र	अध्यापकों की संख्या
1.	ग्रामीण	200
2.	शहरी	200
योग		400

योग्यता के आधार पर

तलिका

क्रमांक	क्षेत्र	अध्यापकों की संख्या
1.	बी.एड. एक वर्षीय	80
2.	बी.एड. द्विवर्षीय	80
3.	डी.एल.एड. द्विवर्षीय	80
4.	बी.एल.एड. चार वर्षीय	80
5.	बी.ए. बी.एड./बी.एस.सी. बी.एड. चार वर्षीय	80
	योग	400

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शिक्षण दक्षता मापनी

शिक्षण दक्षता के मापन हेतु अनुसंधानकर्ता ने डॉ बी. के. पासी एवं डॉ एम. एस. ललिता द्वारा निर्मित नामक मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

शिक्षण प्रभावशीलता मापनी

डॉ0 प्रमोद कुमार और डॉ0 डी0 एन0 मूथा द्वारा निर्मित शिक्षण प्रभावशीलता मापनी नामक परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत अनुसन्धान में शोधकर्ता द्वारा उपयुक्त सांख्यिकीय पद्धतियों का प्रयोग किया है। अनुसन्धान के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु मुख्य रूप से निम्नांकित सांख्यिकी का प्रयोग हुआ है।

1. प्राप्तांकों का मध्यमान।
2. मानक विचलन।
3. 'टी' मूल्य।

परिणाम एवं व्याख्या

1. बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तलिका

बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन

समस्या से संबंधित चर	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
बी.एल.एड. चार वर्षीय	40	112.1	11.78	4.99	0.01 स्तर
डी.एल.एड. द्विवर्षीय	40	101.12	7.37		

उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने पर पाया गया कि बी.एल.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 112.1 व 11.78 है तथा डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 101.12 व 7.37 है, और इनका तुलनात्मक मान (टी मान) 4.99 है। यह तुलनात्मक मान सार्थकता के 0. 01 स्तर पर अपने तालिका मान से उच्च है। शहरी विद्यालयों में कार्यरत बी.एल.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण प्राथमिक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता अधिक है। ये शिक्षक पाठ योजना के स्वरुप, उसके प्रस्तुतीकरण, समापन और विद्यार्थियों के मूल्यांकन को लेकर अधिक सक्रिय व गंभीर होते हैं। जबकि डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षक समापन व मूल्यांकन पर अधिक ध्यान न देते हुए पाठ्यसामग्री को समाप्त करने के लिए तत्पर होते हैं।

अतः इस प्रकार शून्य परिकल्पना– ''बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शहरी शिक्षकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं'' अस्वीकृत सिद्ध होती है, क्योंकि हमारे गणना किये गये मान में सार्थक अन्तर है।

2. बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

तलिका

बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन

समस्या से संबंधित चर	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
बी.एल.एड. चार वर्षीय	80	203.27	15.98	2.69	0.01 स्तर
डी.एल.एड. द्विवर्षीय	80	197.06	12.96		

उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने पर पाया गया कि बी.एल.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों तथा डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 203.27 व 15.98 एवं 197.06 व 12.96 है, और इनका तुलनात्मक मान (टी मान) 2.69 है। यह तुलनात्मक मान सार्थकता के 0.01 स्तर पर अपने तलिक मान से अधिक है। बी.एल.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षक शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक आयामों पर अधिक ध्यान देते है। शैक्षिक पहलुओं को देखते हुए वे ज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोवैज्ञानिक पक्ष पर अधिक जोर देते है। जबकि डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षक शिक्षण प्रभावशीलता के कुछ आयामों और पहलुओं से अनभिज्ञ दिखाई पड़ते है। यह अंतर मध्यमान के द्वारा स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

अतः इस प्रकार हमारी शून्य परिकल्पना– ''बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।'' अस्वीकृत सिद्ध होती है, क्योंकि हमारे गणना किये गये मान में सार्थक अन्तर है।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ मुख्य निष्कर्ष

1. शहरी विद्यालयों में कार्यरत बी.एल.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण प्राथमिक शिक्षकों की शिक्षण दक्षता अधिक है। ये शिक्षक पथ योजना के स्वरुप, उसके प्रस्तुतीकरण, समापन और विद्यार्थियों के मूल्यांकन को लेकर अधिक सक्रीय व गंभीर होते हैं। जबकि डी. एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षक समापन और मूल्यांकन पर अधिक ध्यान न देते हुए, पाठ्यसामग्री को समाप्त करने के लिए तत्पर होते हैं।

2. बी.एल.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षक शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक आयामों पर अधिक ध्यान देते हैं। शैक्षिक पहलुओं को देखते हुए वे ज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोवैज्ञानिक पक्ष पर अधिक जोर देते हैं। जबकि डी.एल. एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उत्तीर्ण शिक्षक शिक्षण प्रभावशीलता के कुछ आयामों और पहलुओं से अनभिज्ञ दिखाई पड़ते हैं। यह अंतर मध्यमान के द्वारा स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

3. दक्षता के आधार पर देखा जाए तो दक्ष शिक्षक अपनी पथ योजना को अच्छे से बनाता है। उसके प्रस्तुतीकरण, समापन और मूल्यांकन पर ध्यान देता है और बच्चों के अनुरूप उसमे परिवर्तन के लिए जगह रखता है। इसी प्रकार से जब बी.एल.एड. चार वर्षीय और डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का अध्ययन किया गया तो पाया गया कि दक्षता के

विभिन्न आयामों को बी.एल.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण शिक्षकों ने बहुत अच्छी प्रकार से शिक्षण प्रक्रिया में प्रयोग करके उसमे दक्षता हासिल की किन्तु डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण शिक्षकों में इन आयामों का आभाव देखा गया। उनके पास जानकारी तो है परन्तु प्रशिक्षण और अनुभव की कमी उनके शिक्षण दक्षता में सुधार की मांग करती है। जबकि चार वर्षीय पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण शिक्षक अपने अनुभवों का प्रयोग करके इसमें निरंतर बदलाव ला रहे हैं।

4. शिक्षण दक्षता में ग्रामीण शिक्षकों में भी समान अंतर देखने को मिलता है। जिसमे बी.एल.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण शिक्षकों का पढ़ाने का तरीका, बच्चों को समझने का तरीका और मूल्यांकन करने का तरीका डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम से उत्तीर्ण शिक्षकों से बेहतर और अलग है। दक्षता के विभिन्न आयामों का अनुसरण बहुत ही लाभप्रद है जो शिक्षण दक्षता को बढ़ाने का काम करता है।

प्रशिक्षण संस्थान संगठनात्मक जलवायु के संबंध में एक दूसरे से भिन्न होते हैं। उनका परिवेश, प्रशिक्षण देने का और पाठ्यक्रम से अवगत कराने का तरीका भी भिन्न भिन्न होता है। इसी प्रकार से उनमें काम करने वाले शिक्षक भी अपने शिक्षण दृष्टिकोण, शिक्षण दक्षता और प्रभावशीलता पर भिन्न भिन्न होते हैं। वे विद्यार्थियों में उनके अभिवृत्यों, क्षमताओं, रुचियों और व्यक्तित्व के अनुरूप दक्षता और प्रभावशीलता के आयामों को विकसित करने का प्रयास करते हैं। वर्तमान अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि प्रशिक्षण संस्थानों का शिक्षकों को प्रशिक्षण देने में महत्वपूर्ण योगदान होता है और यह अध्ययन उसमे बहुत ही उपयोगी साबित होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अकरम (2019) –"माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षक प्रभावशीलता और छात्र उपलब्धि के छात्रों के बीच संबंध बुलेटिन ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च अगस्त 2019, वाल्यूम 41, No. 2, 93-108

अंजली युलु, बी0एस0आर0 (1977)–*शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि, अध्यापन अभिरूचि* तथा शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन। आन्ध्र प्रदेश विश्वविद्यालय। पी–एच0डी0 एजूकेशन।

अमरीक सिंह (1990) ''ऑन बीइंग अ टीचर'' नई दिल्ली, कोणार्क

एंडरसन लॉरिन –इन्क्रेअसिंग टीचर इफेक्टिवनेस, II एडिशन, पेरिस, यूनेस्को

इवांस लिंडा (1998) ''टीचर मोरल, जॉब सटिस्फैक्शन एंड मोटिवेशन''. लंदन, पॉल केपमैन

इफरैम, ग्रोहम (2001)– मल्टी कल्चरल टीचिंग कम्पीटेन्सी ऐज परसीब्ड बाई एलीमेन्टरी स्कूल टीचर्स, डॉक्टर ऑफ एजूकेशन इन एजूकेशनल ऐडमिनिस्ट्रे शन वर्जीनिया, पालिटेक्निक इन्स्टीट्यूट इन वर्जीनिया अमेरिका।

कपिल, एच.के. ''अनुसन्धान विधियां''. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

कौल, एल. ''मेथोडोलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च''. नई दिल्ली, विकास पब्लिकेशन हाउस

गर्ग और इस्लाम (2018) –"माध्यमिक विद्यालय स्तर पर भावनात्मक खुफिया के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता का एक अध्ययन". इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज वाल्यूम 8 (5).

गैनी और मुदासिर, हाफिज (2014) –"जिला श्रीनगर में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण क्षमता का एक तुलनात्मक अध्ययन''रिपोर्ट एंड ओपिनियन, 6(6), 49-54

गिल्फोर्ड एंड फ्रुचेर (1987) ''फंडामेंटल स्टेटिस्टिक्स इन एजुकेशन एंड साइकोलॉजी''. (स्टूडेंट 6 एडिशन) मकग्रॉहिल

डंकिन (1997) –शिक्षकों की प्रभावशीलता का आकलन". इश्यूज इन एजुकेशनल रिसर्च, 7(1), 1997, 37-51.

डिल्लन एवं कौर (2010) –उनके मूल्य पैटर्न के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता का एक अध्ययन. रीसेंट रेसेअर्चेर्स इन एजुकेशन एंड साइकोलॉजी, 15, 5, III-IV.

डेविड मिडिल वुड (2001)''मैनेजिंग टीचर्स अप्रैजल एंड परफॉरमेंस'' लंदन रोटलेस

चौहान, रीति और गुप्ता, प्रतिभा (2014) –"गाजियाबाद जिले में माध्यमिक स्कूल स्तर में शिक्षकों के बीच शिक्षण प्रतियोगिता का अध्ययन एशियाई जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी वाल्यूम 4 (1), Jan. 2014: 355-359

जोशी और परिजा पी0 (2000) ''पर्सनालिटी कोरिलेट्स ऑफ टीचिंग कम्पटीटेन्सी,'' भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका अंक–2, जनवरी–जून 2000 पृ0 57–62 वाल्यूम–19

दक्षनामूर्ति (2010) –"शिक्षकों के व्यक्तित्व का प्रभाव, पेशे के प्रति दृष्टिकोण और छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर शिक्षण प्रभावशीलता. एडुट्रैक, वाल्यूम 9(9), 34 नीलकमल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद.

दत्ता, विभा (2003)–"शिक्षक प्रभावशीलता और आरोही प्रस्तुत करना. इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च. वाल्यूम -22 (2). P-14.

पुष्पम, ए० एम० एल० (2003)–उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षकों की शिक्षण क्षमता का अध्ययन", जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड एक्सटेंशन, वाल्यूम 41.

फील्ड लोरी (1991) ''ट्रेनिंग फॉर कम्पेटेन्सी'' लंदन, कोगन प्रेस